ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

भारत में जनजाति जीवन एवं व्यवसाय

डी.पी.शार्मे
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय महाविद्यालय
पुष्पराजगढ़,
अनूपपुर ,म.प्र.

प्रतिमा संत
अतिथि व्याख्याता.,
भूगोल विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
पुष्पराजगढ़,
अनूपपुर ,म.प्र.

सारांश

आधुनिक वैज्ञानिक चकाचौंध से अनभिज्ञ बहुत सारी जातियों के लोग विश्व में निवास करतें हैं, जो अपने आदिम कालीन परम्परागत सभ्यता व संस्कृति को अपना कर जीवन–यापन कर रहे हैं। जनजातीय समाज के लोग संसार में ऐसे दुर्गम, बीहड़ जंगलों में निवास करते हैं; जहॉ आधुनिकता से बिल्कुल स्पर्श नहीं है। अभाव में प्रकृति पर पूरी तरह निर्भर जनजातीय वर्ग विकट परिस्थिति वाले ऐसे दुर्गम स्थलों में निवास करते हैं, जहॉ जीवन जीना सरल नहीं है कठोर से कठोर श्रम के बावजूद दो जून का भोजन जुटाना मुश्किल का काम रहता है। फटेहाल नंगे पैर वस्त्रों के रूप में लगोटी वृक्षों के पत्ते अथवा छालों से अपना तन ढकते हैं। जानवरों के शिकार के लिए पत्थरों का हथियार तथा तीर कमानों का प्रयोग करते हैं। विश्व के ऐसे स्थल जो बहुत ही बिकट व बीहड़ स्थान हैं, जहॉ की जलवायु जीवन यापन के लिए अनुकूल नहीं है, विषुवत रेखीय क्षेत्र जहॉ सालभर वर्षा होने के कारण जमीन दलदली बनी रहती है। औसत वर्षा दो सौ सेण्टीमीटर से भी अधिक है दूसरी तरफ मरूस्थली क्षेत्र जहॉ भीषण रूप से गर्म वातावरण बना रहता है। धरती पूरी तरह तपती है। ध्रुवीय हिमाच्छादित प्रदेश जहॉ जीवन बिकट स्थिति में जीते हैं, ऐसे ही स्थलों में जनजातीय जनजीवन निवास करती है।

भारतीय सामजिक व्यवस्था के अंतर्गत जिन्हें जनजाति के नाम से संबोधित किया जता है, उनके संबंध में यह विशेष स्मरणीय है कि वे ही भारतीय प्रगैतिहासिक काल के निवासी हैं पूर्व में इसका उल्लेख किया जा चुका है कि वे किसी एक नस्ल की संतान नहीं हैं, तथा उन्होंने अलग–अलग समय में एशिया के विभिन्न क्षेत्रों से प्रस्थान करके भारत में प्रवेश किया फिर भी इन्हें एक निश्चित समुदाय के नाम से संबोधित आर्टिकल 342 के द्वारा किया गया है। इसी प्रकार भारतीय सरकार द्वारा इनके हितों की रक्षा करने के लिए सन 1956 ई0 में एक सूची तैयार की गई, जिसे ''शिड्यूल ट्राइब्स लिस्ट्स मॉडीफिकेशन आर्डर 1956'' आदेश 414 के अनुसार इन्हें मूल जनजाति और उप जनजाति में विभक्त किया गया है। इसके अनुसार आज भारत वर्ष में 550 जनजातियाँ निवास करती हैं। वर्तमान में जनजाति जनगणना विभिन्न जनजातियों के स्थान पर मुख्यतः अनुसूचित जनजातियों के कुल गणना के आधार पर की जाती है।''[1]

''जनजाति का अर्थ सदैव ही विषय सापेक्ष रहा है – उदाहरणार्थ प्राणी विज्ञान में ट्राइब एक कुटुम्ब का बोधक है तो राजनीति शास्त्र में विकसित या अविकसित मानव समाज का मृशास्त्र और समाजशास्त्र में भी जनजाति देशकाल परक होने से नहीं बच पाता। उदाहरण के लिए यूरोप में जनजातियों का लगभग अभाव केवल टोंडा प्रदेश में ही थोड़े से लोग जनजातीय श्रेणी के हैं यही स्थिति श्वेत प्रजाति के लोगों की है। जबकि पूरी की पूरी कृष्ण प्रजाति या अफ्रीका में सहारा के दक्षिण में रहने वाले सभी समाजों को जनजातीय मानने की परम्परा है।''[2]

भारतीय जनजातियों को तीन प्रजातीय वर्ग में मानते हैं –
1. नीग्रिटो, 2. प्रोटो अस्ट्रेलायड, 3. मंगोलायड।[3]

जनजातीय लोग आदिम धर्म को मानते हैं जिसमें भूतों तथा आत्माओं की पूजा का महत्वपूर्ण स्थान है। जनजातीय व्यवसायों को अपनातें है जैसे वन उपज का संग्रह वस्तुओं का संग्रह इनकी खाना बदोसी आदतें होती है। जो मदिरा के प्रति विशेष रूचि रखते हैं ये सभ्य जगत् से दूर पर्वतों तथा जंगलों में दुर्गम स्थानों में निवास करते हैं।

मुख्य शब्द : जनजाति, सामाजिक जीवन एवं व्यवसाय कृषि, पशुपालन, उद्योग।

प्रस्तावना

''जनजातियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकार आधुनिकता से दूर आदिम अवस्था के निकट है आदिम सामाजिक संरचना से आज भी इनका मोहभंग नहीं हुआ है। जंगलों में फटेहाल रहना, महुए से कच्ची शराब निकालना, शिकार करना इनका जीवन व्यापार है। आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध से जनजातियाँ घबड़ाती हैं। शिक्षा के प्रकाश से दूर भागती हैं, अपने बच्चों को पुरानी प्रथाओं और परम्पराओं से दीक्षित करती हैं। बहुपत्नी विवाह और विधवा विवाह का चलन है। विवाह का उद्देश्य बच्चे पैदा करना होता है। जातीय पंचायतयें महत्वपूर्ण होती हैं। जनजातियाँ रूढ़ियों में जीती हैं। इनका विश्वास झाड़–फूँक, मंत्र–तंत्र और टोना–टोटका में होता है।''[4] एक अन्य विचार के अनुसार –

''भारतीय एवं पश्चात्य विद्वानों ने मानव के एक समुदाय को पिछड़े हुए लोग, पहाड़ी लोग, आदिवासी या वनवासी शब्दों का सम्बोधन किया है।''[5]

'भारत की जनजातीय समाज आज भी परम्परागत जीवन यापन करने के आदी हैं। यह एक ऐसा समाज है जो आधुनिकता से परे अपनी रूढ़िगत मान्यताओं को लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जीवन यापन कर रहा है। यह समाज आज भी गरीबी झेल रहा है। देश के दुर्गम क्षेत्रों में जीवन यापन कर रहा है। आधुनिक साधनों की कमी इन क्षेत्रों में है जहॉ इस समाज के लोग निवासरत हैं। यह एक ऐसावर्ग है जिसे न्यूनतम आवश्यकताओं से ही अपनी शारीरिक उपक्रमों द्वारा आवश्यकता की वस्तुएँ तैयार करनी पड़ती हैं। खेती के काम आने वाले औजारों के साथ–साथ शारीरिक साज–सज्जा के लिए वन से प्राप्त सामग्रियों द्वारा स्वनिर्मित गहने तैयार करना, पहनने के लिए वस्त्र बुनना, कास्तकारी, हस्तशिल्प, काष्ठ शिल्प, भित्तिचित्र जैसे विविध कलाओं में माहिर इस जनजातीय समाज की अपनी विशिष्ट कला है। जो अनादिकाल से अपनी पृथक जीवन शैली के साथ जीवकोपार्जन की विभिन्न वस्तुओं को तैयार कर अपनी सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अधिकांश जनजातीय वर्ग प्रकृति पर पूरी तरह आश्रित हैं। वन से प्राप्त सामग्री पर ही अपना जीवन जीते हैं।''[1]

जनजातियों का भौगोलिक विवरण –

भारत की कुल आवादी का 8.20 प्रतिशत भाग जनजातीय वर्ग का है 2001 की जनगणना के अनुसार प्रत्येक राज्य का विवरण इस प्रकार है–

1	जम्मू व कश्मीर	10 - 90 %
2	हिमालय प्रदेश	04 - 02 %
3	पंजाब	0 - %
4	चंडीगढ़	0 - %
5	उत्तराखण्ड	3 - 02 %
6	हरियाणा	0 %
7	दिल्ली	0 %
8	राजस्थान	12 - 56 %
9	उत्तरप्रदेश	0 - 60 %
10	बिहार	0 - 91 %
11	सिक्किम	20 - 60 %
12	अरुणाचल प्रदेश	64 - 22 %
13	नागालैण्ड	89 - 15 %
14	मणिपुर	34 - 20 %
15	मिजोरम	94 - 46 %
16	त्रिपुरा	31 - 05 %
17	मेघालय	85 - 94 %
18	असम	12 - 41 %
19	पश्चिम बंगाल	5 - 50 %
20	झारखण्ड	26 - 30 %
21	उड़ीसा	22 - 13 %
22	छत्तीसगढ़	31 - 76 %
23	मध्यप्रदेश	20 - 27 %
24	गुजरात	14 - 76 %
25	दमन–द्वीप	8 - 86 %
26	दादर एवं नगर हवेली	62 - 24 %
27	महाराष्ट्र	8 - 85 %
28	आन्ध्रप्रदेश	6 - 49 %
29	कर्नाटक	6 - 55 %
30	गोवा	0 - 04 %
31	लक्षद्वीप	94 - 51 %
32	केरल	1 - 41 %
33	तमिलनाडु	1 - 04 %
34	पाण्डचेरी	0 - 07 %
35	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	8 - 27 %

डॉ0 रामगोपाल तिवारी ने छिंदवाड़ा जिले के जनजातीय संस्कृति के अन्तर्गत अपने शोध ग्रंथ में जनजातियों के वितरण को चार भागों में विभक्त किया है–

1. हिमालय के पहाड़ों में रहने वाली आदिवासी जातियॉ
2. भारत के मध्य में रहने वाली आदिम जातियॉ
3. दक्षिण की आदिवासी जातियॉ
4. मध्यप्रदेश की आदिम जातियॉ[2]

जनजातियों का भौगोलिक विवरण

भारत में जनजातियों के भौगोलिक विवरण को ध्यान में रखकर सर्वप्रथम बी0एस0 गुहा 1951 ने इसे तीन जनजातीय क्षेत्रों में विभक्त किया –

उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम क्षेत्र

राभां, खासी, अका, डफला, मिरी, अपातानी, नागा, कुकी, लुसाई, लेपचा, गारो, गैलोंग, जौनसारी, लरवेरी, कर्णफूली, थारू, गुज्जर व लम्बा हैं।

मध्यवर्ती क्षेत्र

संथाल, मुण्डा, उरॉव, हो, खोड़, भूमिज, लाधा, कोरा, गोड़, बैगा, भील, मीना, दामर आदि हैं।

दक्षिण क्षेत्र

चे–चु, इरुला, पनियन, कादार, टोडा, टोटा तथा पुलयन आदि हैं।

क्रमांक	भौगोलिक क्षेत्र	प्रमुख जनजातियों के नाम
1	हिमाचल प्रदेश	गद्दी, गुज्जर, भोट, किन्नौरा, थारू, कुकी, हमार, बिमसा, नागा आदि अनेक उपजातियॉ

		भी हैं यथा त्रिपुरी, रियान, थड़ाऊ आदि।
2	मध्य भारतीय क्षेत्र	संथाल, मुण्डा, उरॉव, हो, भूमिज, लोधा, कोया, खोण्ड, गोंड़, सोवर, गदवा, कमार, बैगा, भूईवॉ, कोरकू, हल्वा आदि।
3	पश्चिमी भारतीय क्षेत्र	मीना, भील, डफली, घोटिया, गमीत, सह्याद्री, कोली, महादेव, कोंकण आदि।
4	दक्षिण भारतीय क्षेत्र	गोंड़, कोंया, अण्डी, भेरुकूल, कोण्डा, डोरा, इरुला, माला, कुरावान, नैकाडा, यरावा, पुलियन, पनियन, कादर आदि।
5	द्वीप समूह क्षेत्र	अण्डमानी, ओंगे, जरावा, शॉम्पेन, सेन्टेनेलिस आदि।

''जनजाति परिवारों तथा पारिवारिक वर्गों का एक ऐसा समूह जिनका एक सामान्य नाम है, जिनके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर निवास करते हैं, तथा विवाह, व्यवसाय के विषय में कुछ निषेधाज्ञाओं का पालन करते हैं, जिन्होंने एक आदान–प्रदान संबंधी तथा पारस्परिक कर्तव्य विषयक एक निश्चित व्यवस्था का विकास कर लिया है साधारणतया जनजाति अंतर्विवाह के सिद्धान्त का समर्थन करती हैं और उनके सभी सदस्य अपनी ही जनजाति के अन्तर्गत विवाह करते हैं।''[3]

अध्ययन का उद्देश्य

जनजातीय समाज का जीवन और व्यवसाय विविधताओं से भरा पड़ा है। मनुष्य को आदिम अवस्था जंगली जानवरों के आखेट की अवस्था थी, ऐसा सर्वमान्य सिद्धान्त है। इसके जवीन का क्रमिक विकास अनेक शरणियों में होकर गुजरा है। इसी प्रकार जनजातीय समाज भी आखेट युग से चलता हुआ कृषि और रोजगार युग तक की यात्रा कर एक स्थायित्व की प्राप्ति कर सका है। आज का जनजातीय समाज अपनी रोजी–रोटी के लिए अनेक प्रकार के उद्योग–धंधें कर रहा है, जिन्हें हम क्रमशः प्रस्तुत शोध अध्ययन में समेटने का प्रयास प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देष्य भारतीय जनजाति जीवन और व्यवसाय का अध्ययन करना है।

अध्ययन की विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक और द्वितीयक समंको का समावेश किया गया है। प्राथमिक और द्वितीयक समंको का एकत्रीकरण संबंधित विभागों से किया है, और आंकड़ो का प्रस्तुतीकरण और शोध कार्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

जनजातीय जीवन एवं व्यवसाय

भारतीय जनजाति जीवन एवं व्यवसाय का अध्ययन इस प्रकार है।

कृषि संबंधी कार्य

जनजातीय समाज जंगलों, पहाड़ों, दुर्गम स्थलों में निवास करने वाला बहुसंख्यक समाज है। इनका जीवन कृषि पर आधारित है। ये लोग जंगलों को काटकर कृषि योग्य भूमि तैयार करते हैं, जिसमें परम्परागत रूप से कृषि कार्य करते हैं। विशेष रूप से मोटे अनाज मक्का, कोदो, कुटकी की खेती करते हैं। जनजातीय समाज द्वारा स्थानान्तरित कृषि व स्थायी कृषि कार्य दोनों ही प्रकार का किया जाता है।

पशुपालन संबंधी कार्य

जनजातीय समाज का जीविकोपार्जन का माध्यम पशुपालन व्यवसाय है। घने जंगलों के मध्य निवास करने वाली पशुपालन जनजातीय समाज का जीविकोपार्जन पशुपालन पर भी निर्भर है। दुधारू पशुओं में गाय, भैस, बकरियॉ प्रमुख रूप से पालते हैं। इसके साथ ही मुर्गी पालन भी करते हैं। लोग घने लंगलों के मध्य घास–फूस का घर बनाकर रहते हैं। तथा उसी से लगा खपरैल मकान में पालतू पशुओं को रखने के लिए एक सार बना देते हैं। जिसमें पशुओं को रखा जाता है। जंगलों में इन पशुओं की चारागाह की पर्याप्त सुविधा मिलती है। भारत में निवास करने वाली कुछ जनजातियों का उद्यम केवल पशु–पालन है जैसे – टोंडा, गुरजर, नगेशिया, भरवाद, मालाधारी, खारी, बंजारा, कोचिया आदि।[4]

पशुचारक बहुत से जनजाति लोग अभी भी पशुचारन को ही मुख्य आजीविका की तरह अपनाए हुये हैं।

आखेट संबंधी कार्य

भारतीय जनजातियों में आखेटन, खाद्य संकलन का प्रमुख अंग रहा है। इस वर्ग की जनजातियों की आजीविका का प्रमुख साधन वन्य पशुओं का आखेटन वनों से जड़, फल, फूल इत्यादि खाद्य सामग्रियों का संकलन करना तथा मात्स्यमारन भी करते है। इन साधनों से जीविकोपार्जन करने वाली जनजातियाँ सम्पूर्ण भारत में पायी जाती है। इनके भौगोलिक वितरण में हिमालय क्षेत्र के राजी जो उत्तर प्रदेश के निवासी है, मध्य भारतीय क्षेत्र में बिरहोर, पहाड़ी खड़िया, बिर्जिया, तथा कोरबा जो बिहार के निवासी हैं। उड़ीसा के जुआंग तथा मध्यप्रदेश के पहाड़ी भारिया गोंड़ भी इसी समूह में आते हैं। दक्षिण भारतीय क्षेत्र में चेन्चू, मान्डी, कादार, मालपन्ताराम, अरन्दन, कुरूम्बा, पालियन, तथा अण्डमान के ओंगें, जरवा इत्यादि इसी समूह के उदाहरण हैं।

शिल्पकारी संबंधी कार्य

भारत की कुछ जनजातियॉ दस्तकारी के कार्य में संलग्न हैं। इन जनजातियों के जीवनयापन का मुख्य आधार हस्तशिल्प ही है। उत्तर प्रदेश के कंजर जनजाति टोकरी बुनने तथा रस्सी बनाने जैसे कार्यो में संलग्न है। जनजातियॉ हस्तशिल्प कार्य में पीछे नहीं हैं। मिट्टी के पक्के बर्तन, खिलौने, सजावटी समान आदि का निर्माण कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। लकड़ी के सजावटी समान बनाने में आदिवासी आगे हैं। हस्तशिल्प कार्य में टोकरी तथा बांस के अन्य सामान बनाकर जीवन यापन कर रहे हैं।

भारतीय जनजाति जीवन एवं व्यवसाय की समस्याएं

यह शोध कार्य मध्य प्रदेश के जनजातीय समाज को लेकर केन्द्रित है। जिसमें छत्तीसगढ़ी भी सम्मिलित है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि मध्य प्रदेश से हमारा आशय पुराने मध्यप्रदेश से है। पुराने मध्यप्रदेश में भौगोलिक और राजनैतिक दोनों दृष्टियों से दोनों एक

थे। आज मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ दोनों पृथक–पृथक राजनैतिक इकाइयाँ बन गयी हैं, किन्तु अभी भी दोनों इकाइयों के जनजातियों के जीवन–शैली में एकरूपता और साम्य के अटूट संबंध देखे जा सकते हैं। इसलिए जनजातीय लोक–साहित्य एवं उनकी संस्कृति के अध्ययन में मैने प्रमुख रूप से इन दोनों प्रदेशों की जनजातियों के केन्द्र में रखकर ही अपना दृष्टिपथ निर्मित किया है। यह अवश्य है कि इस अध्ययन में मैंने अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा नहीं की है। आवश्यकतानुकूल मैंने अन्य क्षेत्रों के जनजातीय जीवन और साहित्य को भी ग्रहीत कर उनका विश्लेषण, विवेचन किया है।

आधुनिक वैज्ञानिक चकाचौंध से अनभिज्ञ बहुत सारी जातियों के लोग विश्व में निवास करतें हैं, जो अपने आदिम कालीन परम्परागत सभ्यता व संस्कृति को अपना कर जीवन–यापन कर रहे हैं। जनजातीय समाज के लोग संसार में ऐसे दुर्गम, बीहड़ जंगलों में निवास करते हैं; जहॉ आधुनिकता से बिल्कुल स्पर्श नहीं है। अभाव में प्रकृति पर पूरी तरह निर्भर जनजातीय वर्ग विकट परिस्थिति वाले ऐसे दुर्गम स्थलों में निवास करते हैं, जहॉ जीवन जीना सरल नहीं है कठोर से कठोर श्रम के बावजूद दो जून का भोजन जुटाना मुश्किल का काम रहता है। फटेहाल नंगे पैर वस्त्रों के रूप में लगोटी वृक्षों के पत्ते अथवा छालों से अपना तन ढकते हैं। जानवरों के शिकार के लिए पत्थरों का हथियार तथा तीर कमानों का प्रयोग करते हैं। विश्व के ऐसे स्थल जो बहुत ही बिकट व बीहड़ स्थान हैं, जहॉ की जलवायु जीवन यापन के लिए अनुकूल नहीं है, विषुवत रेखीय क्षेत्र जहॉ सालभर वर्षा होने के कारण जमीन दलदली बनी रहती है। औसत वर्षा दो सौ सेण्टीमीटर से भी अधिक है दूसरी तरफ मरूस्थली क्षेत्र जहॉ भीषण रूप से गर्म वातावरण बना रहता है। धरती पूरी तरह तपती है। ध्रुवीय हिमाच्छादित प्रदेश जहॉ जीवन बिकट स्थिति में जीते हैं, ऐसे ही स्थलों में जनजातीय जनजीवन निवास करती है।

सुझाव

जनजाति समाज के उत्थान हेतु प्रशासन स्तर से सकारात्मक पहल करने की नितांत आवश्यकता है। जनजाति समाज परंपराओं, रूढ़ियो, अंधविश्वासों से जकड़ा हुआ समाज है। जिससे निजात दिलाने की आवश्यकता है। इसके लिये समाज के लोगों को शिक्षा के माध्यम से जागरूक बनाना तथा उनकी आर्थिक सामाजिक समस्याओं का निराकरण करना तथा विकास के मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

उपुर्यक्त भारत में जनजाति जीवन एवं व्यवसाय के परिपेक्ष्य में विवेचन और विश्लेषण करने के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि भारतीय जनजाति समाज निष्चित रूप से आज भी अपनी पंरपरागत जीवनशैली के आधार पर जीवनयापन कर रही है। यह एक ऐसा समाज है जो सभ्य दुनिया के तमाम कृतिमताओं से दूर पंरपरागत अनेक वर्जनाओं से परे कतई अलग संसार है। जिसका अपना परंपरागत कार्य जीवन जीने की पृवित्तियां आधुनिकता से परे बनावटी पन से दूर सुदूर घने जंगलो में दुर्गम घाटियों में वीहड़ प्रांतो में जो अभावग्रस्त जीवन यापन करने वाला समाज है, जहां आज भी मूलभूत सुविधाओं से अछूता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जनजातीय पर्यावरण : डॉ0 चन्द्रमणि प्रसाद त्रिपाठी, पृ. 12*
2. *अर्जन सिंह शिक्षक, धुरकुटा – बैगा जनजाति, साक्षात्कार वर्ष 2014*
3. *बी0एस0 गुहा – भारत के आदिवासी लेख, आदिवासी पत्रिका, सितम्बर 1968 पृ. 38*
4. *मीणा जनजाति एक परिचय – डॉ0 लक्ष्मी नारायण मीणा, पृ. 14*
5. *डॉ0 सी.पी. तिवारी – जनजातीय पर्यावरण, पृ. 84*